www.nacoonline.org

NACO समाचार

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन
की समाचार पत्रिका

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार

खंड VIII अंक 1
जनवरी-मार्च, 2012

रेड रिबन एक्सप्रेस

यात्रा का तीसरा चरण

विषय–वस्तु

3| सचिव और महानिदेशक, नाको का संदेश

मुख्य लेख

5| रेड रिबन एक्सप्रैसः यात्रा का तीसरा चरण

कार्यक्रम

8| राष्ट्रव्यापी रणनीतिक सूचना प्रबंधन प्रणाली की शुरूआत

9| नशीली दवा की सुई लगाने वालों के बीच एचआईवी की रोकथाम के लिए ओपिऑड प्रतिस्थापन चिकित्सा का विस्तार

10| एचआईवी के साथ जीने वाले लोगों तक सेवाएं पहुंचाने के लिए मुम्बई ने नये ''शक्ति क्लीनिक'' प्राप्त किये

अभियान

11| यूएसएड के प्रशासक डॉ. राजीव शाह सफदरजंग अस्पताल, दिल्ली में एचआईवी/एड्स के कार्यक्रमों का अवलोकन करते हुए

12| एनएसीपी III के दौरान संचार की एक यात्रा

13| धर्म–आधारित संस्थाओं के लिए जागरूकता कार्यक्रम

खोज

14| कल्याणी स्वास्थ्य पत्रिका एक प्रभावकारी संचार का साधन

राज्यों के समाचार

15| आंध्र प्रदेश में आदिवासी उत्सव ने फैलाई एड्स जागरूकता

15| अण्डमान और निकोबार की प्राथमिकता है नशीले पदार्थों के उपयोग का मुद्दा

16| कर्नाटक ने 46 एआरटी केंद्रों में प्रकोष्ठ स्थापित किये

16| अरुणाचल प्रदेश में संगीत ने किया युवाओं को एचआईवी–मुक्त रहने के लिए प्रेरित

17| रक्तदान करें – प्यार का संदेश फैलायें!

17| ओडिशा में लोक नृत्यों के माध्यम से ग्रामीण जन समुदाय का शिक्षण

18| वचनबद्धता का आश्वासन

नई रिलीज

19| नाको की वार्षिक रिपोर्ट 2011–12 का विमोचन

संपादक के नाम पत्र

राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के कार्यालय में **नाको समाचार** पर मेरी नजर पड़ी। एचआईवी से असुरक्षित लोगों की सुरक्षा के लिए जिस तरह का काम किया जा रहा है उसके बारे में जानकर मैं काफी प्रभावित हुई। मेरे घर पर काम करने वाली महिला के पति की कुछ समय पहले टीबी से मृत्यु हो गई थी, पर जब वह बीमार पड़ी तो पता चला कि उसे एचआईवी है और उसके पति की मृत्यु एड्स के कारण हुई थी। इससे पहले कि हम उसकी कुछ मदद कर पाते पर काफी देर हो चुकी थी, पर हमने उसकी आठ वर्ष की बेटी को गोद ले लिया है जो एचआईवी निगेटिव है। हम पूरी कोशिश कर रहे हैं कि उसे प्यार, सुरक्षा और शिक्षा हासिल हो। नाको समाचार को और व्यापक रूप से वितरित किया जाना चाहिए। मेरा सुझाव है कि इसकी प्रतियां आवास कल्याण एसोसिएशनों के प्रमुखों के बीच भी वितरित की जानी चाहिए ताकि आम लोगों में अवसरवादी संक्रमणों और रोग के आरंभिक लक्षणों के बारे में जागरूकता पैदा की जा सके।

रक्षा दत्ता
घरेलू महिला
पानीपत,
हरियाणा

• • •

मैंने राजधानी में आयोजित विश्व एड्स दिवस समारोह में छात्र वालंटियर के रूप में कार्य किया। वहां कण्डोमों के वितरण और प्रदर्शन के कार्य को देख कर मैं काफी प्रभावित हुआ। साथ ही गत वर्ष मैं रेड रिबन एक्सप्रैस देखने भी गया। मैंने न केवल जानकारी प्राप्त की, बल्कि अपने मित्रों के साथ एचआईवी जांच भी कराई। हाल के महीनों में ऐसे कई अभियान चलाये गये और विज्ञापन प्रदर्शित किये गये जिनसे आम आदमी को यह समझने में मदद मिली है कि एचआईवी संक्रमित व्यक्ति को छूने या उसके साथ मिलकर खाना खाने से नहीं होता। इन सभी प्रयासों से एचआईवी को नियंत्रित करने में और नये संक्रमणों की संख्या को कम करने में मदद मिली है। हम आशा करते हैं कि हम पश्चिमी देशों की तरह और अधिक लोगों को दूसरी पंक्ति का एआरटी उपचार और जीवन का उपहार प्रदान करने में सक्षम होंगे।

राहुल गोलक
छात्र
नई दिल्ली

• • •

मैं समग्रतापूर्ण चिकित्सा की मजबूत पक्षधर रही हूं; और खुद अनेक आयुर्वेदिक और जड़ी–बूटी वाली औषधियां तैयार करती हूं। हमारे लिवर टॉनिक, शहद, खांसी का सिरप आदि का कई लोग उपयोग करते हैं। मैं एड्स की दवाओं के क्षेत्र में नये शोधकार्य और प्रगति के बारे में जानने की इच्छुक हूं और यह भी जानना चाहती हूं कि क्या सौ प्रतिशत आर्गेनिक (जैविक), स्वास्थ्यकारी और विपरीत प्रभावों से रहित औषधियों की शुद्धता और प्रभावकारिता सुनिश्चित करने के लिए हम अग्रणी दवा–निर्माताओं के साथ मिलकर कार्य कर सकते हैं।

किरण चड्ढा
प्रबंध निर्देशिका
निर्वाणा वैलनेस
नई दिल्ली

प्रिय पाठकों,

गत तीन महीनों के घटनाक्रम से आपको अवगत कराते हुए मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। एनएसीपी III की 5 वर्षों की अवधि के दौरान जो भी प्रयास किये गये अब वे सफलता के संकेत दर्शा रहे हैं। महामारी में गिरावट के संकेत नजर आ रहे हैं और रोकथाम, देखरेख, सहायता एवं उपचार सेवाओं के विस्तार के माध्यम से सकारात्मक परिणाम हासिल किये गये हैं।

एनआरएचएम के साथ साझेदारी में रेड रिबन एक्सप्रैस के तीसरे चरण का समारंभ एक महत्वपूर्ण अवसर था और इस दौरान राजनीतिक नेताओं, सरकारी अधिकारियों और विकास साझेदारों ने देश को एचआईवी–मुक्त करने की वचनबद्धता ज़ाहिर किया। इस तीसरे चरण में रेड रिबन एक्सप्रैस आम लोगों और विशेष रूप से युवाओं को एचआईवी/एड्स, प्रजनन स्वास्थ्य, संचारी रोगों और अन्य स्वास्थ्य संबंधी मुद्दों से संबंधित संदेश प्रदान करेगी।

उच्च जोखिम वाले समूहों को सेवाएं प्रदान करने में तेजी लाने के अपने प्रयासों के अंतर्गत नाको सरकारी अस्पतालों के माध्यम से ओपिऑड प्रतिस्थान चिकित्सा (ओएसटी) प्रदान कर रहा है। यह एक अतिरिक्त कदम है जिसे नशीली दवा की सुई का उपयोग करने वालों के बीच एचआईवी/एड्स की रोकथाम के लिए हानि–न्यूनीकरण कार्यक्रम के अंतर्गत उठाया गया है।

जिस प्रकार से राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटियों ने एनएसीपी के लक्ष्य हासिल करने की दिशा में कार्य किया वह कार्यक्रम की बड़ी सफलताओं में से एक है। चाहे विशेष दिवसों के आयोजन का मामला हो, रक्तदान अभियानों के आयोजना का मामला हो या असुरक्षित आबादी तक सेवाएं पहुंचाने का कार्य हो, उन्होंने हमेशा गैर–सरकारी संस्थाओं, समुदाय–आधारित संस्थाओं और स्थानीय अभिशासी निकायों के साथ मिलकर कार्य किये है। इस अंक के राज्यों वाले भाग में इन इकाइयों के कार्य को संक्षेप में प्रस्तुत किया गया है।

नाको ने वर्ष 2011–12 की अपनी वार्षिक रिपोर्ट जारी की है जिसमें वर्ष के दौरान एनएसीपी III के कार्यान्वयन की प्रगति और हासिल की गई उपलब्धियों को प्रस्तुत किया गया है। यह रिपोर्ट नाको की आधिकारिक वेबसाइट पर उपलब्ध है।

अब जब हम एनएसीपी IV की दिशा में प्रविष्ट हो रहे हैं तो ठोस प्रयासों की जरूरत है। हम एक ऐसी ठोस कार्य–योजना तैयार किये जाने की आशा करते हैं जो और अधिक स्वस्थ समाज और एचआईवी–शून्य समाज के अपने लक्ष्य को आगे बढ़ाने के लिए रणनीति और जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन का मार्गदर्शन करेगी।

सायन चटर्जी
सचिव, एड्स नियंत्रण विभाग
और महानिदेशक, नाको
स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार

रेड रिबन एक्सप्रेस III का मार्ग मानचित्र

राष्ट्रीय कवरेज के आंकड़े

राज्य	पड़ाव स्टेशनों की संख्या	पड़ाव दिवसों की संख्या	प्रदर्शनी देखने आने वालों की संख्या	प्रशिक्षित लोगों की संख्या	परामर्श प्राप्त करने वाले लोगों की संख्या	एसटीडी का उपचार प्राप्त करने वाले लोगों की संख्या	एचआईवी की जांच कराने वाले लोगों की संख्या	उन लोगों की संख्या जिनसे क्षेत्र कार्यकलापों के माध्यम से सीधे–सीधे संपर्क किया गया	कार्यक्रम की परिधि में लिए गए लोगों की कुल संख्या (प्रदर्शनी + लोक कला)
दिल्ली	2	3	3793	420	127	10	98	0	3793
राजस्थान	5	10	88189	2292	2334	390	1912	44179	132368
मध्य प्रदेश	10	23	370878	5816	7897	1143	7496	146680	517558
गुजरात	7	17	213074	4325	3275	312	2548	0	213074
महाराष्ट्र	12	24	262530	5610	9151	1511	8498	105071	367601
गोवा	1	4	19112	678	495	16	135	4942	24054
कुल	**37**	**81**	**957576**	**19141**	**23279**	**3382**	**20687**	**300872**	**1258448**

रेड रिबन एक्सप्रैस: यात्रा का तीसरा चरण

माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री श्री गुलाम नबी आजाद, दिल्ली की माननीय मुख्यमंत्री श्रीमति शीला दीक्षित और माननीय राज्य मंत्री स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण श्री एस. गांधीसेलवन रेड रिबन एक्सप्रेस III के समारोह के दौरान फ्लैगिग ऑफ करते हुए

विश्व एड्स दिवस पर एचआईवी संबंधी संदेशों पर पुनः बल देते हुए और छिपी आबादियों तक पहुंच बनाते हुए और अधिक सेवाओं, कार्यकर्ताओं और योजनाओं के साथ रेड रिबन एक्सप्रैस के तीसरे चरण का प्रारंभ।

12 जनवरी 2012, राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर रेड रिबन एक्सप्रेस ने अपनी पूरे देश की यात्रा का तीसरा चरण शुरू किया। वह एचआईवी की रोकथाम, उपचार, देखभाल और सहायता तथा आम लोगों के लिए स्वास्थ्य के संदेशों के साथ अपनी इस यात्रा पर निकली।

रेड रिबन एक्सप्रेस ने लोगों की नब्ज को समझा

रेड रिबन एक्सप्रेस चरण II के मूल्यांकन अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि रेड रिबन एक्सप्रेस के संपर्क में आये 74 प्रतिशत लोगों में एचआईवी–रोकथाम के कम से कम दो तरीकों की जानकारी थी। इससे यह भी स्पष्ट हुआ कि सांस्कृतिक कार्यक्रमों के उपयोग के फलस्वरूप एचआईवी संबंधी मुद्दों पर उनमें दिलचस्पी पैदा हुई और बनी रही।

रेड रिबन एक्सप्रेस के नवीनतम कार्यक्रमों और सफलताओं ने अपने संचालकों की क्षमताओं को विभिन्न क्षेत्रों में परिष्कृत किया – चाहे वह सूचना प्रसार व जागरूकता निर्माण का क्षेत्र हो, परामर्श, जांच तथा रेफरल का मुद्दा हो, अगली कतार के कार्यकर्ताओं, शिक्षकों और सेवा–प्रदाताओं के प्रशिक्षण तथा क्षमता–निर्माण का पहलू हो या सूचना–मनोरंजन का उपयोग हो।

कार्यकुशलता के साथ प्रबंधन हेतु प्रणालियों और प्रक्रियाओं की स्थापना

रेड रिबन एक्सप्रेस सर्वोच्च स्तर पर समन्वय और साझेदारियों की एक मिसाल है। इसे स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय और रेल मंत्रालय के सहयोग से कार्यान्वित किया जा रहा है। राज्य स्तर पर इस पूरी प्रक्रिया को मार्गदर्शित करने वाली राज्य संचालन समितियां रेड रिबन एक्सप्रेस की सहायता करती हैं।

इस कार्य में गीत और नाटक प्रभाग, क्षेत्र प्रसार निदेशालय की स्थानीय इकाइयां और आकाशवाणी, दूरदर्शन तथा प्रैस इंफार्मेशन ब्यूरो भी राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटियों के साथ एकजुट हुए हैं। जिला स्तर पर एक परामर्श और समन्वय समिति यह कार्य करती है जिसमें जिला परिषद के सदस्य, स्थानीय पुलिस, स्वास्थ्य विभाग, नेहरू युवा केंद्र, रेलवे और सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय के प्रतिनिधि शामिल हैं।

रेड रिबन एक्सप्रेस के घटक

ट्रेन में आठ कोच (डिब्बे) हैं। हर कोच की अपनी भूमिका है और तद्नुसार ही उसे सुसज्जित और रूपांकित किया गया है।

कोच 1–4 इन कोचों में इंटरएक्टिव टच स्क्रीनों और 3–डी मॉडल्स सहित एचआईवी और एड्स के जैव–चिकित्सीय पहलुओं पर जानकारी; एचआईवी/एड्स और उससे संबंधित देखरेख, सहायता और उपचार सेवाओं, कलंक तथा भेदभाव पर शैक्षिक सामग्री; इस समय अपनाई जा रही समग्र अंतः सेक्टोरल/मुख्य धाराकरण पद्धति; और साथ ही सामान्य स्वास्थ्य, स्वच्छता, टीबी जैसे संक्रामक रोगों और आरसीएच सेवाओं से संबंधित प्रदर्शनियां हैं।

कोच 5 यह कोच एक सभागार/सम्मेलन स्थल का कार्य करती है जिसमें पंचायत सदस्यों, आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, स्वयं सहायता समूहों, युवाओं और महिलाओं के प्रतिनिधियों के चयनित समूहों के लिए प्रशिक्षण का इंतजाम किया गया है। इसमें एक बार में 60 लोगों तक को प्रशिक्षण प्रदान किया जा सकता है; और साथ ही एलसीडी प्रोजेक्टर और लोक कला प्रदर्शनों के लिए एक मंच की व्यवस्था भी है।

नॉको की अतिरिक्त सचिव आराधना जौहरी और डीएसएसीएस के परियोजना निदेशक श्री फैजी ओ हाशमी के साथ रेड रिबन एक्सप्रेस III के शुभारंभ के अवसर पर खुशियां मनाती रेड रिबन एक्सप्रेस टीम

कोच 6 यह कोच परामर्श और चिकित्सा सेवाएं प्रदान करता है। इसमें चार परामर्श कक्ष और दो डॉक्टरों के कक्ष हैं। यहां परामर्श और जांच सेवाएं प्रदान की जाती हैं और एसटीआई तथा आरटीआई के लिए उपचार प्रदान किया जाता है।

कोच 7 का इस्तेमाल चालक दल के सदस्य, निगरानी और मूल्यांकन करने वाले कर्मचारी, और नाको तथा एसएसीएस अधिकारी अपनी यात्रा के दौरान करेंगे।

कोच 8 इसमें कार्यालय, रसोई और भोजन कक्ष है।

रेड रिबन एक्सप्रेस के लिए तैयारी

ट्रेन के पहुंचने से पहले

रेड रिबन एक्सप्रेस अपने 12 महीने के सफर के दौरान 23 राज्यों के 162 स्टेशनों से होकर गुजरेगी। इन स्टेशनों पर लक्ष्य समूहों तक पहुंच बनाने और उन्हें आमंत्रित करने के लिए आगमन–पूर्व प्रचार कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। रेड रिबन एक्सप्रेस को स्पष्टता से उजागर करने और उसके प्रचार–प्रसार के लिए अनेक समानांतर कार्यकलाप आयोजित किये गये जो इस प्रकार हैं:

- अधिक श्रोताओं और दर्शकों वाले समय के दौरान रेडियो और टीवी विज्ञापन, अखबारों में विज्ञापन; स्थानीय केबल टीवी पर स्ट्रिप संदेशों का प्रसारण।
- क्षेत्रीय प्रैस सूचना ब्यूरो (पीआईवी), दूरदर्शन, डीएफपी, तथा जन संपर्क निदेशालय (डीपीआर) के बीच समन्वय।
- प्रैस सूचना ब्यूरो, डीपीआर/जिला सूचना कार्यालय की सहायता से विशेष सामग्री और लेख आदि तैयार किये गये और उन्हें नियमित कवरेज के लिए स्थानीय संचार माध्यमों के पास भेजा गया।
- आम लोगों को लामबंद करने के लिए नेहरू युवक केंद्र, एनएसएस, एनसीसी, भारत स्काउट्स एंड गाइड्स तथा गैर–सरकारी संगठनों की सहायता प्राप्त की गई।
- साझेदार संगठनों, मंत्रालयों/विभागों को शामिल किया गया और क्षेत्र प्रचार निदेशालय तथा गीत एवं नाटक प्रभाग की सेवाएं प्राप्त की गई।
- अंतः–सेक्टोरल और अंतः–विभागीय प्रयासों को सूचित करने एवं सुदृढ़ बनाने के लिए जिला परामर्श एवं समन्वय समिति द्वारा मंजूर किये अनुसार जिला मीडिया योजना तैयार की गई।
- ट्रेन के आगमन से पूर्व पड़ाव स्थलों/प्लेटफार्मों पर सभी इंतजामों की जांच करना जैसे कि पहुंचने की सड़क, बिजली की आपूर्ति, पेय जल और स्वच्छता सुविधाओं की उपलब्धता, आदि।
- यदि जरूरत पड़े तो जिला प्रशासन की मदद प्राप्त करना।
- स्थानीय पुलिस की तैनातगी, खाद्य सुरक्षा आगंतुकों और संपत्ति की सुरक्षा सुनिश्चित करना।
- एनआरएचएम के साथ कार्य करना और यह सुनिश्चित करना कि कोच तथा प्लेटफार्म पर डॉक्टर तथा अर्धचिकित्सीय कर्मचारी आदि उपलब्ध हों।

ट्रेन के आगमन के बाद

प्लेटफार्म पर कार्यकलाप: स्वागत समारोह; ट्रेन के रवाना होने तक प्रदर्शनी/सांस्कृतिक कार्यकलाप; प्लेटफार्म के निकट उपयुक्त स्थानों पर परामर्श और जांच सुविधा।

क्षेत्र कार्यकलाप: जिलों के भीतर एक आईईसी–सघन बस अभियान चलाया जायेगा जो मार्ग मानचित्र के अनुसार हर दिन 40 गांवों को अपनी परिधि में लेगा। बसें 40 गांवों की लक्ष्य आबादी तक पहुंच बनाते हुए चार पूर्व–निर्धारित स्थानों में से प्रत्येक स्थान पर चार कला प्रस्तुतियां आयोजित करेंगी। इन कला प्रस्तुतियों में भाग लेने के लिए आसपास के पांच गांवों के समुदायों के सदस्य को लामबंद किया जायेगा (2 बसें X 4 स्थान X एक स्थान पर 5 गांव शामिल किये जायेंगे)।

ट्रेन में आयोजित किये जाने वाले कार्यकलाप: प्रदर्शनियों, ऑडियो–विजुअल्स का आयोजन, प्रशिक्षण के लिए सभागार सुविधा और परामर्श एवं चिकित्सा सेवाएं।

राज्यों की कहानियां

जब बाकी देश रेड रिबन एक्सप्रेस के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा है वहां जो राज्य पहले ही रेड रिबन एक्सप्रेस की मेजवानी कर चुके हैं, यहां उनके अनुभव प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

मध्य प्रदेश

मध्य प्रदेश में व्यापक स्तर पर भागीदारी देखने को मिली

रेड रिबन एक्सप्रेस सागर शहर में जनवरी 25, 2012 को पहुंची। वहां स्टेशन पर एक भव्य उद्घाटन समारोह आयोजित किया गया। मध्य प्रदेश एड्स नियंत्रण सोसाइटी के परियोजना निदेशक ने अभियान का उद्घाटन किया।

आगंतुकों के बारे में जानकारी: शहर में अपने 21 दिन के पड़ाव के दौरान 3,70,878 लोग प्रदर्शनी देखने आये जिसमें दूर–दराज के गांवों के लोग, ऑटो रिक्शा चालक, शिक्षण संस्थाओं के युवा लोग स्वयं समूह से महिलाएं (एसएचजीएस), असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिक, विभागी अधिकारी, निगमों के कर्मचारी, सशस्त्र बलों के कार्मिक और फेरी लगाने वाले शामिल थे।

प्रशिक्षण: एचआईवी/एड्स, लांछन और भेदभाव तथा एचआईवी संबंधी उपचार, देखरेख और सहायता के विषय पर 105 बैचों में 5,816 लोगों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

जांच: 7,496 लोगों ने स्वेच्छा से अपनी एचआईवी जांच कराई और 1,143 ने एसटीआई संबंधी सेवाएं प्राप्त कीं।

गुजरात

गुजरात में एक ही दिन में सर्वाधिक संख्या में लोग प्रदर्शनी देखने आये

रेड रिबन एक्सप्रेस ने वडोदरा में फरवरी 17, 2012 को प्रवेश किया और राज्य में अपनी 14 दिवसीय यात्रा के दौरान वह सात रेलवे स्टेशनों – पाटण, सुरेन्द्रनगर, हापा–जामनगर, भावनगर, अहमदाबाद और वलसाड – से होकर गुजरी। 27 फरवरी, 2012 को भावनगर में तब एक नया राष्ट्रीय रिकार्ड दर्ज किया गया, जब एक ही दिन में रेड रिबन एक्सप्रेस प्रदर्शनी को देखने सर्वोच्च संख्या में लोग उमड़ आये जिनकी संख्या 36,108 थी। पिछला राष्ट्रीय रिकार्ड 11 फरवरी, 2012 को मध्य प्रदेश के नागदा में बना था जहां 33,309 लोग प्रदर्शनी देखने आये थे।

आगंतुकों के बारे में जानकारी: इस प्रदर्शनी से कुल 2,13,074 लोग लाभान्वित हुए।

प्रशिक्षण: एचआईवी/एड्स से संबंधित मुद्दों पर लक्ष्य समूहों के 4,457 लोगों को प्रशिक्षण और 3,175 लोगों को परामर्श प्रदान किया गया।

जांच: 2,548 लोगों की एचआईवी जांच की गई और 384 लोगों का एसटीआई के लिए उपचार किया गया।

दुर्गापुर, राजस्थान के स्टेशन पर रेड रिबन एक्सप्रेस को देखने के लिए आगंतुकों की भीड़

एड्स–शून्य स्थिति की आकांक्षा के साथः रेड रिबन एक्सप्रेस के तीसरे चरण का समारंभ

सफदरजंग रेलवे स्टेशन में जनवरी 12, 2012 को उत्सवपूर्ण छटा नजर आ रही थी। खचाखच भरे कार्यक्रम स्थल पर रेड रिबन एक्सप्रेस खड़ी थी। कुल 2000 लोगों को आमंत्रित किया गया था जिनमें अनुदानकर्ता संस्थाओं राष्ट्र संघ एजेंसियों, गैर–सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधि, पॉजिटिव नेटवर्कों के सदस्य, कार्यकर्ता, सरकारी अधिकारी, नाको के कर्मचारी और हितैषी शामिल थे।

रेड रिबन एक्सप्रेस का समारंभ स्वामी विवेकानंद की पुण्य तिथि के अवसर पर किया गया था। मंच पर दिल्ली की माननीय मुख्यमंत्री, श्रीमति शीला दीक्षित, माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, श्री गुलाम नबी आजाद और नाको की अतिरिक्त सचिव, सुश्री आराधना जौहरी, की प्रभावशाली उपस्थिति ने समारोह को भव्यता प्रदान की।

माननीय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री, श्री गुलाम नबी आजाद ने कहा कि सही जानकारी एचआईवी संक्रमण को रोकने के लिये सबसे अच्छा तरीका है और यह रेड रिबन एक्सप्रेस के तीसरे चरण में एचआईवी की रोकथाम के संदेश के साथ देश भर में लाखों युवाओं तक पहुंच जायेगा। श्री आजाद ने पिछले दो चरणों की तुलना में एक बड़ी सफलता की कामना की और देश भर में कलंक और भेदभाव को संबोधित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका पर बल दिया।

माननीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री ने रेलवे मंत्रालय से प्राप्त सहायता का उल्लेख करते हुए कहा कि स्वतंत्र भारत के इतिहास में पहली बार यह देखने में आया कि एक पूरी रेलगाड़ी एक विशेष उद्देश्य को समर्पित है।

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण सचिव, श्री पी.के. प्रधान ने एनआरएचएम के साथ साझेदारी में कार्य के विस्तार की ओर ध्यान आकर्षित किया। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्य मंत्री, श्री गांधी सेल्वन ने रेड रिबन एक्सप्रेस के परिणामों पर संतोष प्रकट करते हुए यह आशा व्यक्त की कि युवाओं को विभिन्न कार्यकलापों के माध्यम से प्रसारित जानकारी से लाभ प्राप्त होगा।

सुश्री आराधना जौहरी ने कहा कि रेड रिबन एक्सप्रेस का कार्यान्वयन एक बहु–साझेदार पहलकदमी के बिना संभव नहीं था। उन्होंने सहायता प्रदान करने के लिए विश्व बैंक, एनआरएचएम, पीएचएफआई और यूएनएफपीए का आभार व्यक्त करते हुए यह आशा प्रकट की कि ये सभी मिलकर इस अभियान को सफलता प्रदान करेंगे।

■ डॉ. संजीव चक्रवर्ती, कंसल्टेंट, नाको और सुश्री प्राची गर्ग, सलाहकार (आईईसी), नाको

राष्ट्रव्यापी रणनीतिक सूचना प्रबंधन प्रणाली की शुरूआत

एसआईएमएस का स्नैपशॉट

राष्ट्रव्यापी रणनीतिक सूचना प्रबंधन प्रणाली (एसआईएमएस) को मजबूत बनाना एनएसीपी III की चार मुख्य रणनीतियों में से एक है। देश में एचआईवी की महामारी का प्रभावकारी प्रत्युत्तर तैयार करने की दिशा में ठोस रणनीतिक जानकारी प्राप्त करना एनएसीपी III की उच्च प्राथमिकतापूर्ण कार्यावली है। इस प्रणाली को ठोस रिपोर्टिंग और अनुश्रवण सुनिश्चित करने के उद्देश्य से नियोजन, अनुश्रवण, मूल्यांकन और शोध से जुड़े मुद्दों पर कार्य करने के लिये आरंभ किया गया था।

राष्ट्रव्यापी रणनीतिक सूचना प्रबंधन प्रणाली विभिन्न आंकड़ों स्रोतों से तथ्यों और आंकड़ों के विश्लेषण और समेकन के लिये तैयार किये गये परिष्कृत उपकरणों के साथ एक वेब–आधारित समेकित अनुश्रवण और मूल्यांकन प्रणाली है। यह एक ऐसी केंद्रीकृत प्रणाली है जो उपयोगकर्ताओं के लिये रिपोर्टिंग इकाइयों, जिला स्तर और राज्य स्तर से तथ्यों और आंकड़ों को प्राप्त करना तथा जब भी जरूरी हो इन्हें देख पाना सुगम बनाती है। यह केंद्रीकृत अभिपुष्ट तथ्यों और आंकड़ों के माध्यम से कम्प्यूटर्राइज प्रबंधन सूचना प्रणाली की कार्यक्षमता को बढ़ाती है। वेब–समर्थित प्रयोज्यता (एप्लीकेशन) और रिपोर्टिंग इकाई से राष्ट्रीय स्तर तक कार्यश्रम डाटा प्रबंधन अधिकारों (एक्सेस राइट्स कंट्रोल) का उपयोग करके डाटा हस्तांतरण कार्यविधियों में सुधार लाया जाता है। यह प्रणाली जनसांख्यिक विशेषताओं और जीआईएस सहायता सहित भौगोलिक क्षेत्र के संबंध में महामारी की प्रगति पर नजर रखने हेतु साक्ष्य प्रदान करती है और साथ ही ट्राइएंगुलेशन और डाटा अभिपुष्टि क्षमताओं के माध्यम से मुख्य कार्यक्रम क्षेत्रों के लिये व्यक्तिगत स्तर पर डाटा संग्रह को संभव बनाती है।

राष्ट्रव्यापी रणनीतिक सूचना प्रबंधन प्रणाली की शुरूआत चरणबद्ध रूप में की गई। राष्ट्रीय, राज्य जिला और रिपोर्टिंग इकाई स्तर पर जून 2011 तक 10,266 कर्मिकों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। यह प्रणाली विभिन्न स्रोतों से डाटा ट्राइएंगुलेशन के माध्यम से बेहतर ढंग से निर्णय लेने के उपकरण प्रदान करती है और इस तरह रणनीतिक या कार्यनीतिक स्तरों पर मूल्यांकन, अनुश्रवण तथा नीतिगत निर्णय लेने की प्रक्रिया को सुगम बनाती है।

■ श्री उग्र मोहन झा, अनुश्रवण एवं मूल्यांकन अधिकारी
और श्री अनंत बसुदेव साहू,
कार्यक्रम अधिकारी (अनुश्रवण और मूल्यांकन), नाको

नशीली दवा की सुई लगाने वालों के बीच एचआईवी की रोकथाम के लिए ओपिऑड प्रतिस्थापन चिकित्सा का विस्तार

एनएसीपी II और III के अंतर्गत नशीली दवा की सुई लगाने वालों को सुई प्रतिस्थापन और आदान-प्रदान की सुविधा प्राप्त थी, किंतु अब उन्हें ओएसटी का लाभ भी प्राप्त होगा।

पंजाब की माननीय स्वास्थ्य मंत्री, प्रो. लक्ष्मी कन्ता चावला, नाको की अतिरिक्त सचिव सुश्री आराधना जौहरी और पंजाब के प्रधान सचिव श्री सतीश चन्द्रा ने अमृतसर, पंजाब के गुरू नानक देव मेडिकल कॉलेज में ओएसटी केन्द्र का शुभारंभ किया

नशीली दवा की सुई लगाने वालों (आईडीयूज) के लिए आशा की नई किरण

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम (एनएसीपी III) के अनुसार, देश में नशीली दवा की सुई लगाने वालों (आईडीयू) की संख्या लगभग 2 लाख (संशोधित आकलनों के अनुसार 1.77 लाख) है। नशीली दवा की सुई का उपयोग करने की समस्या को आरंभ में देश के उत्तर–पूर्वी भागों मणिपुर, मिजोरम व नागालैंड और महानगरों में चिन्हित किया गया था। किंतु अब इस तथ्य को स्वीकार किया जा रहा है कि देश के अन्य भाग भी इस समस्या से प्रभावित हैं खासकर पंजाब और हरियाणा।

वर्ष 2008–09 के दौरान की गई प्रहरी निगरानी (सेंटिनेल सर्वेलेंस) के अनुसार आईडीयू के बीच 9.2 प्रतिशत एचआईवी पॉजिटिव लोग हैं। यह अनुपात किसी भी आबादी उप–समूह से अधिक है। इसके अलावा देश के कुछ भागों में एचआईवी पॉजिटिव होने की दर काफी अधिक है। महाराष्ट्र, मणिपुर, पंजाब, दिल्ली, चंडीगढ़, मिजोरम और उड़ीसा (7.3 प्रतिशत) जैसे राज्यों में ≥ 5 प्रतिशत की उच्च एचआईवी व्याप्ति देखी गई है।

एनएसीपी III के अंतर्गत नाको का प्रत्युत्तर

हानि–न्यूनीकरण दृष्टिकोण आईडीयूज के बीच एचआईवी की समस्या का मुख्य प्रत्युत्तर है। भारत सरकार ने राष्ट्रीय एड्स रोकथाम और नियंत्रण नीति, 2002 में 'हानि न्यूनीकरण' की एक रणनीति के रूप में पुष्टि की है। यह रणनीति समुदाय के प्रति मैत्रीपूर्ण तरीके से लांछन और भेदभाव से मुक्त जरूरत–आधारित रोकथामकारी सेवाएं प्रदान करके आईडीयूज और उनके यौन साझेदारों के बीच एचआईवी की रोकथाम सुनिश्चित करती हैं। हानि न्यूनीकरण का उद्देश्य नशीली दवा तैयार करके और उसकी सुईं लगाने के लिए एक दूसरे की सुइयों, सीरिंजों और अन्य उपकरणों के उपयोग और असुरक्षित यौन संपर्क जैसे एचआईवी संचरण को बढ़ाने वाले व्यवहारों को कम करके एचआईवी की व्याप्ति में कमी लाती है। सुई और सीरिंज आदान–प्रदान कार्यक्रम इस रणनीति का एक मुख्य घटक है।

हानि–न्यूनीकरण हस्तक्षेपों का कार्यान्वयन गैर–सरकारी संगठनों द्वारा संचालित परियोजनाओं के माध्यम से किया जाता है। इसके अंतर्गत हमजोली–नेतृत्व वाला संपर्क मॉडल अपनाया जाता है जिसके अंतर्गत वर्तमान और भूतपूर्व आडीयू अन्य सक्रिय आईडीयूज से संपर्क करते हैं और आपसी बातचीत के माध्यम से एचआईवी रोकथाम के संदेश प्रदान करते हैं। एक संपर्क केंद्र भी स्थापित किया जाता है जहां अधिकतर आडीयूज आसानी से पहुंच सकें। वहां डाक्टर, नर्स और परामर्शदाता को एक टीम उन्हें चिकित्सा सेवाएं प्रदान करती हैं और साथ ही एसटीआई उपचार तथा अन्य स्वास्थ्य देखरेख सेवाओं में रेफरल की व्यवस्था भी होती है। इसके अतिरिक्त सेवाग्राही की सेवाओं तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए प्रवर्तन एजेंसियों, राजनीतिक और धार्मिक नेताओं के साथ एडवोकेसी भी की जाती है।

भारत में ओपिऑड प्रतिस्थापन चिकित्सा की शुरूआत

ओपिऑड प्रतिस्थापन चिकित्सा (ओएसटी) आईडीयूज के लिए नाको के एचआईवी रोकथाम कार्यक्रम का अतिरिक्त घटक हैं जिसे

छत्तीसगढ़, दुर्ग के जिला अस्पताल में एक ओएसटी केन्द्र

चण्डीगढ़ में ओएसटी पर राष्ट्रीय प्रशिक्षक प्रशिक्षण

2007–08 में आईडीयूज के लिए हानि–न्यूनीकरण कार्यक्रम में शामिल किया गया था। नाको के ओपिऑड प्रतिस्थापन चिकित्सा (ओएसटी) विश्व भर में ओएसटी की आईडीयूज के बीच एचआईवी की रोकथाम करने; उपचार नियमों के अनुपालन और फौलोअप तथा आईडीयूज के समग्र कार्यचालन और जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए एक बहुत ही प्रभावकारी रणनीति के रूप में मान्यता प्राप्त है। क्योंकि ओएसटी चिकित्सा एक आरामदायक स्तर हासिल करने में मदद करती है, इसलिए सेवाग्राही नशीली दवा की सुई लगाना बंद कर देता है और एचआईवी तथा सुई लगाने से होने वाले अन्य रोग (उदाहरण के लिए हैपिटाइटिस–बी और हैपिटाइटिस–ए) होने की संभावना हो जाती है। ओएसटी सेवाएं गैर–सरकारी संगठनों और साथ ही सरकारी संस्थानों द्वारा प्रदान की जाती है। जब ओएसटी आईडीयूज के लिए रोकथाम कार्यक्रम में शामिल किया जाता है, तब सेवाएं गैर–सरकारी संगठनों द्वारा संचालित आईडीयू कार्यक्रमों के माध्यम से ही उपलब्ध होती है। वर्ष 2007–08 के बाद से नाको ने मानव संसाधन और दवाएं (बुग्रनोरफाइन) प्रदान करके देश के 15 राज्यों में 52 एनजीओ ओएसटी केन्द्रों को सहायता प्रदान की है। हर ओएसटी केंद्र का वार्षिक आधार पर अस्पताल और स्वास्थ्य देखरेख प्रदान करने वाली संस्थाओं के राष्ट्रीय प्रत्यायन (एक्रीडीशन) बोर्ड के साथ स्वतंत्र रूप से प्रत्यायन किया गया है। एनजीओ–संचालित ओएसटी केंद्र 4800 से अधिक सेवाग्राहियों को ओएसटी प्रदान कर रहे हैं और उनके पास सीमित संसाधनों की स्थिति में ओएसटी सेवाएं प्रदान करने का मूल्यवान अनुभव है।

नाको ने पंजाब के पांच जिलों में सरकारी स्वास्थ्य केंद्रों में ओएसटी केंद्र खोलकर एक शुरूआत की थी। इसे लेकर जो उत्साहपूर्ण प्रतिक्रिया प्राप्त हुई उसके आधार पर एक राष्ट्रीय ओएसटी विस्तार योजना तैयार की गई जिसे इस समय 31 राज्यों में कार्यान्वित किया जा रहा है। इस समय नाको 19 राज्यों और संघ–शासित प्रदेशों में 68 ओएसटी केंद्रों के माध्यम से इस योजना को कार्यान्वित कर रहा है। हर केंद्र लगभग 6500 आईडीयूज को मुफ्त ओएसटी चिकित्सा प्रदान करता है। ओएसटी के लिए इस्तेमाल की जाने वाली दो सर्वाधिक सामान्य दवाएं बुप्रेनोरफाइन और मेथोडोन हैं।

■ डॉ. आलोक अग्रवाल
कार्यक्रम अधिकारी (ओएसटी), नाको और
श्रीमति सोफिया कुमुकचम, तकनीकि अधिकारी, नाको

एचआईवी के साथ जीने वाले लोगों तक सेवाएं पहुंचाने के लिए मुम्बई ने नये "शक्ति क्लीनिक" प्राप्त किये

अब सरकारी अस्पतालों में आईसीटीसीज और जांच सेवाएं अधिक उजागर और उपयोगकर्ताओं के लिए मैत्रीपूर्ण होकर सामने आयेंगी।

मुम्बई में सरकारी अस्पतालों की एक सबसे बड़ी चुनौती यह है कि उनके आईसीटीसी केंद्रों की सेवाओं का उपयोग नहीं हो पाता। सरकारी अस्पतालों में स्थित होने के बावजूद यह पाया गया है कि वे एक कोने में कहीं सिमटे होते हैं और अस्पताल आने वाले जान नहीं पाते कि वे हैं भी या नहीं; और उनका उद्देश्य क्या है। ये केंद्र अस्पतालों में होते तो हैं पर लक्ष्य आबादी की नजर में नहीं आ पाते। इतना ही नहीं जो लोग इन केंद्रों की सेवाएं प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें इन्हें ढूंढने में अपना कीमती वक्त बर्बाद करना पड़ता है क्योंकि अस्पताल के परिसर में इस संबंध में निर्देश नहीं होते कि वे कहां हैं और इन केंद्रों के बारे में अस्पताल के कर्मचारियों की जानकारी भी कम होती है।

इस कमी को दूर करने के लिए राज्य ने 'शक्ति' पहलकदमी की शुरूआत की। इस पहलकदमी के फलस्वरूप उपयोगकर्ता अब सभी आईसीटी केंद्रों को देख सकते हैं। इसके लिए ब्रांडिंग तत्वों का प्रभावकारी उपयोग किया गया। इसके लिए अस्पतालों का निरीक्षण किया गया और अस्पतालों में विभिन्न स्थलों पर संकेत का उपयोग किया गया।

पंजीकरण के समय ही यह महत्वपूर्ण संदेश दिया जाता है कि सभी सेवाएं मुफ्त हैं और कागज वगैरह लाने की जरूरत नहीं है और आप सीधा आईसीटी केंद्र में जा कर सेवाएं प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा, एमडीएसीएस ने ऐसे तौर–तरीके और रीतियां तैयार की हैं जिनमें 'शक्ति' परियोजना के अनुभव और तत्व शामिल हैं। ये इस प्रकार हैं: सभी विजुअल तत्वों में शक्ति ब्रांड के रंगों का उपयोग, हर शक्ति क्लीनिक के प्रवेश स्थल पर हिंदी और मराठी में प्रेरणात्मक पोस्टर; तथा पीएलएचआईवी के शंसापत्रों या प्रमाण पत्रों वाले पोस्टर। परामर्शदाताओं ने शक्ति के रंगों वाले विशेष रूप से तैयार किये गये प्रयोगशाला कोट पहने हुए थे। इसके चलते अस्पताल में उन्हें अन्य सेवा प्रदाताओं के बीच अलग से पहचानने में मदद मिली। व्यक्तिगत पहचान स्लिपों, सहमति पत्रों और रेफरल स्लिपों पर भी शक्ति ब्रांड का उपयोग करते हुए प्रेरणात्मक तथा लांछन–विरोधी संदेश प्रमुखता से दर्शाये गये थे।

हर आईसीटीसी केंद्र में मुम्बई के समस्त 100 आईसीटीसी केंद्रों के स्थान को चिन्हित किया गया था। इससे लोगों को यह फैसला लेने में मदद मिली कि विलंब होने या लंबी लाइन होने की स्थिति में उन्हें वहीं अपनी बारी का इंतजार करना चाहिए या किसी अन्य केंद्र में जाना चाहिए।

■ सुश्री विनीता वेंकटरमन
संयुक्त निदेशक (आईईसी), मुम्बई डीएसीएस

यूएसएड के प्रशासक डॉ. राजीव शाह सफदरजंग अस्पताल, दिल्ली में एचआईवी/एड्स के कार्यक्रमों का अवलोकन करते हुए

सफदरजंग अस्पताल में प्रदर्शनी के दौरान यूएसएआईडी के प्रशासक डॉ. राजीव शाह, नाको की अतिरिक्त सचिव सुश्री आराधना जौहरी के साथ

भारत के अपने हाल के दौरे के दौरान, यूएसएआईडी के प्रशासक डा. राजीव शाह, दिसम्बर 21, 2011 को नाको की अतिरिक्त सचिव सुश्री आराधना जौहरी, के साथ नई दिल्ली के सफदरजंग अस्पताल में एचआईवी/एड्स अभिनव कार्य प्रदर्शनी देखने गये। डॉ. राजीव शाह के दौरे का उद्देश्य एचआईवी/एड्स का मुकाबला करने में भारत के नेतृत्व को मान्यता प्रदान करना और भारत सरकार के साथ यूएसएआईडी की लंबी और सफल साझेदारी को समारोहित करना था।

अपने दौरे एचआईवी के दौरान यूएसएआईडी के प्रशासक डॉ. राजीव शाह ने माता–पिता से बच्चों को संचरण की रोकथाम का कार्य करने वाले केन्द्रों और एआरटी केन्द्रों के चिकित्सा अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ मिलकर सरकारी कार्यक्रमों और सेवाओं पर चर्चा की। इसके साथ ही वे एचआईवी/एड्स के साथ जीने वाले लोगों, एड्स अनाथों और एचआईवी से असुरक्षित बच्चों से मिले और यह जानकारी प्राप्त की कि उनके स्वास्थ्य और सामाजिक–आर्थिक जरूरतों की पूर्ति के लिए नाको और यूएसएआईडी किस तरह एक साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं।

डॉ. शाह ने यूएसएआईडी की सहायता प्राप्त करने वाले पांच साझेदारों की प्रदर्शनियां भी देखी। हर प्रदर्शनी में एक अलग नवाचार एचआईवी/एड्स कार्यक्रम को उजागर किया गया था। ये इस प्रकार थे:

- हैलो+ – एक निःशुल्क हैल्पलाइन, जिसे टाटा बिजनैस सपोर्ट सोल्यूशन की मदद से स्थापित किया गया था
- स्टार हैल्थ इंश्यूरेंस कंपनी की मदद से पीएलएचआईवी के लिए एक एचआईवी/एड्स बीमा कार्यक्रम
- एड्स वैक्सीन पहल
- नाको और महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संयुक्त रूप से कार्यान्वित अनाथ और असुरक्षित बच्चों के लिए एक नीतिगत कार्यक्रम
- माता–पिता के बच्चों में एचआईवी संचरण की रोकथाम के संबंध में एक नवाचारपूर्ण स्वास्थ्य संप्रेषण कार्यक्रम। श्री शाह के दौरे का समापन उनके और नाको की अतिरिक्त सचिव की टिप्पणियों के साथ हुआ।

■ प्राची गर्ग
सलाहकार (आईईसी), नाको

एनएसीपी III के दौरान संचार की एक यात्रा

नई दिल्ली में राष्ट्रीय संचार सम्मेलन में नाको की अतिरिक्त सचिव सुश्री आराधना जौहरी के साथ एनएसीबी को सदस्य सुश्री सरोज पचौरी

एचआईवी/एड्स के सफर में व्यवहार-परिवर्तन के लिए प्रभावकारी और कार्यक्रम संप्रेक्षण सुनिश्चित करने के लिए एनएसीपी III के अनुभवों को ठोस रूप देना।

एनसीपी एक समृद्ध और लाभप्रद सफर या और इससे भारत में किसी भी अन्य स्वास्थ्य कार्यक्रम की तुलना एचआईवी कार्यक्रम में संप्रेषण अधिक विकसित और ठोस रूप में उभर कर आना है। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम के दूसरे चरण से तीसरे चरण में संप्रेषण रणनीति और उसके कार्यान्वयन का महत्वपूर्ण रूप से विकास हुआ है। एचआईवी कार्यक्रम के भीतर संप्रेषण मात्र आईईसी या प्रचार–प्रसार से आगे बढ़कर व्यवहार परिवर्तन संप्रेषण की ओर अग्रसर हुआ। संप्रेषण को प्रभावकारी, कार्यक्रम और परिणाम–उन्मुख बनाने के प्रयास किये गये। तीसरे चरण में संप्रेषण की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार थी – युवाओं तक पहुंच बनाने के लिए विशेष रणनीतियों, कण्डोम के उपयोग को प्रोत्साहन, एचआईवी की जांच में आने वाली बाधाओं को दूर करना, एसटीआई का उपचार और रक्तदान। नाको की अग्रणी पहल, रेड रिबन एक्सप्रेस, पूर्वोत्तर के राज्यों में मल्टीमीडिया अभियान अैर राष्ट्रीय रूप से संचालित लोक संचार लोक संचार माध्यम अभियान ऐसी सशक्त पहलकदमियों के उदाहरण हैं जिनके माध्यम से सीधे–सीधे लोगों तक पहुंच बनाई जा सकी। नाको ने लांछन और भेदभाव के विरूद्ध संघर्ष के लिए आत्म–प्रभावकारिता, सशक्तीकरण, एकजुटता और अनुकूल वातावरण को पोषित करने के लिए प्रयास किये हैं। एनएसीपी III के दौरान नाको ने एचआईवी और एड्स संबंधी जागरूकता के लिए एकीकृत संचार रणनीतियों और कार्यक्रमों; एचआईवी/एड्स के साथ जीने वाले लोगों को रोकथाम, देखरेख और सहायता सेवाएं प्रदान करने और लांछन में कमी लाने की दिशा में कार्य किया।

एनएसीपी III की उपलब्धियों को ठोस रूप प्रदान करने और बहुविषयी क्षेत्र के विशेषज्ञों से सीखने के उद्देश्य से नाको ने जान हॉपकिंस ब्लूमबर्ग स्कूल ऑफ पब्लिक हैल्थ, सेंटर फॉर कम्यूनिकेशन प्रोग्राम (जेएचयू सीसीपी और यूएसएआईडी के साथ मिल कर एक राष्ट्रीय संचार सम्मेलन) का आयोजन किया।

विचार–विमर्श हेतु उठाये गये मुद्दे इस प्रकार थेः "जानकारी से व्यवहार परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ना"; "मांग–आपूर्ति समीकरण को हल करना सीखना और संप्रेषण को सेवाओं तथा उत्पादों से जोड़ना"; "विभिन्न लक्ष्य समूहों तक पहुंचना और बदलाव को प्रेरित करना"; तथा "बदलते लक्ष्य समूहों के साथ गुणवत्तापूर्ण संप्रेषण प्रयासों को बनाये रखना।"

सम्मेलन में अकादमिक जगत के लोगों और संचार माध्यमों के विशेषज्ञों ने ऐसा प्रेरक संप्रेषण विकसित करने के बारे में अनुभवों का आदान–प्रदान किया जिसमें व्यवहार को बदलने और जीवनों पर प्रभाव डालने की क्षमता हो। एचआईवी/एड्स संप्रेषण के सर्वोत्तम तौर–तरीकों, भूमंडलीय और विशेषकर भारत की केस स्टडीज तथा भारत में एचआईवी/एड्स कार्यक्रमों में अनुदानकर्ता एजेंसियों और हितधारकों द्वारा योगदान, आदि विषयों पर भी विचार–विमर्श किया गया।

विचार–विमर्शों ने निःसंदिग्ध रूप से यह सिद्ध कर दिया कि एचआईवी/एड्स जैसी जटिल स्थितियों से निबटने के लिए चतुराईपूर्ण संप्रेषण की जरूरत है। नाको की अतिरिक्त सचिव, सुश्री आराधना जौहरी ने रणनीतिक दृष्टिकोणों की जरूरत पर बल दिया और बताया कि किस तरह एक गतिशील विश्व में एचआईवी/एड्स संप्रेषण के लिए इनकी जरूरत होती है। उन्होंने अंगित किया कि संचार केवल आईईसी और प्रचार–सामग्री तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसे व्यवहार परिवर्तन की दिशा में अग्रसर किया गया।

बहुमीडिया, पारंपरिक मीडिया और मासमीडिया सहित नाको द्वारा किये गये अनेक संप्रेषण प्रयासों से श्रोताओं को अवगत कराते हुए उन्होंने कहा कि, "रेड रिबन एक्सप्रैस जैसे नवीन कार्य जागरूकता पैदा करने और सेवाओं तथा सुविधाओं तक पहुंच को बढ़ाने के अलावा अन्य स्वास्थ्य कार्यक्रमों के लिए भी अपनी विशेषताओं को प्रदर्शित करने और उपयोगकर्ताओं को सेवाएं तथा अनेक प्रकार की जानकारियां प्रदान करने का अवसर प्रदान करते हैं।

कांग्रेस के माननीय सांसद श्री ऑस्कर फर्नांडीज का कहना था कि हालांकि भारत ने इस महामारी पर नियंत्रण कायम करने में सफलता प्रदान की, फिर भी असुरक्षित और सीमांतीकृत आबादियों तक पहुंचने के नये तरीके ढूंढने की दृष्टि से हमें आत्मतुष्ट नहीं होना चाहिए।

जेएचयू सेंटर फार कम्यूनिकेशन प्रोग्राम के रणनीतिक संचार कार्यक्रमों के निदेशक, श्री विलियम ग्लास ने सभी साझेदारों को राष्ट्रीय एचआईवी/एड्स कार्यक्रम के एक मुख्य घटक के रूप में संप्रेषण में सहायता के लिए एक सहमेल गठित करने हेतु प्रोत्साहित किया। उन्होंने संप्रेषण के क्षेत्र में कार्यरत पेशेवरकर्मियों से आग्रह किया कि वे रणनीतिक संप्रेषण विकसित करें और एनएसीपी की रोकथाम और नियंत्रण के प्रयासों मे संप्रेषण की भूमिका को मजबूत बनायें।

संगोष्ठी के उद्घाटन के अवसर पर दीप प्रज्जवलित किए जाने के समारोह पर माननीय संसद सदस्य श्री ऑस्कर फर्नाडीज और एफपीए के राष्ट्रपति और नाको अतिरिक्त सचिव सुश्री आराधना जौहरी

व्यापक प्रकार के विषयगत जन संचार माध्यमों और जमीनी स्तर पर सघन अभियानों को शामिल करते हुए नाको के रणनीतिक संप्रेषण ने न केवल आम लोगों तक पहुंच बनाई, बल्कि सर्वाधिक जोखिम में पड़े तथा देश के ग्रामीण और दूर–दराज के हिस्सों में रहने वाले लाखों लोगों के जीवन और मन को स्पर्श किया।

■ सुश्री संजंती वेलु, राष्ट्रीय निदेशक, जेएचयू सीसीपी और
प्राची गर्ग, सलाहकार (आईईसी), नाको

धर्म–आधारित संस्थाओं के लिए जागरूकता कार्यक्रम

धार्मिक नेताओं द्वारा पहलकदमी करने का संकल्प

जनवरी 2012, को एक अग्रणी संस्था, शेप ने एचआईवी/एड्स पर एक अंतः जिला स्तरीय कार्यशाला–सह–जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया। संस्था जोरहाट जिले के सिवसागर, उत्तर कमलबाड़ी सतरा और माजुली में पुरुषों के साथ यौन संपर्क करने वाले पुरुषों (एमएसएम) के लिए एक लक्ष्यबद्ध हस्तक्षेप परियोजना का कार्यान्वयन कर रही है।

सिवसागर, जोरहाट, ढिब्रूगढ़ और तिनसुखिया जिलों के धर्म–आधारित संगठनों के लिए एक जागरूकता अभियान के अंग के रूप में सिवसागर जिले के उपायुक्त, श्री जतिंद्र लहकार ने धार्मिक नेताओं की एक विशाल सभा को संबोधित किया और उनसे अपने–अपने समुदायों में एचआईवी–रोकथाम के संदेश फैलाने में अपनी ओर से अधिक सक्रियता दर्शाने तथा लांछन और भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष में योगदान करने का आग्रह किया।

सत्र के अंत में धार्मिक नेताओं ने एचआईवी/एड्स के ध्येय को आगे बढ़ाने हेतु अनेक पहलकदमियां करने का संकल्प किया। इनमें से कुछ पहलकदमियां इस प्रकार थीं: प्रमुख समारोहों का आयोजन,

असम के जोरहाट में एफबीओज के लिए एक जिला स्तरीय कार्यशाला

लोकप्रिय त्यौहारों के वार्षिक कलेंडर में एचआईवी संबंधी संदेशों को शामिल करने; विशेष दिवसों का आयोजन करना; और चर्च, मस्जिद या मंदिर में दिये जाने वाले प्रवचनों का उपयोग करके जानकारी प्रदान करना।

■ सुश्री बोंटी सैकिया
संयुक्त निदेशक (आईईसी), असम राज्य एड्स नियंत्रित सोसाइटी

कल्याणी स्वास्थ्य पत्रिका एक प्रभावकारी संचार का साधन

बृहत् स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम के प्रभाव का अध्ययन करने तथा उसे और अधिक प्रभावशाली बनाने के तरीके सुझाने के लिए आंकलन।

दूरदर्शन के विकास संचार प्रभाग (डीसीडी) की पथप्रदर्शक स्वास्थ्य संचार पहल, कल्याणी स्वास्थ्य पत्रिका ने भारत के नौ सर्वाधिक लोकप्रिय राज्यों में लोगों के जीवन को स्पर्श किया है। मई 30, 2002 को डीसीडी और केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की संयुक्त पहल के रूप में आरंभ किये गये इस साप्ताहिक टीवी कार्यक्रम में मलेरिया, एचआईवी/एड्स, टीबी/तपेदिक, आयोडीन की कमी, तंबाकू और पानी से होने वाले रोगों पर ध्यान केंद्रित किया। बाद के वर्षों में कुष्ठ रोग, अंधापन/नेत्रहीनता नियंत्रण और खाद्य सुरक्षा जैसे मुद्दों को इसमें शामिल किया गया।

इस कार्यक्रम को एक ऐसे मनोरंजक, भागीदारीपूर्ण, आवश्यकता पर आधारित टीवी कार्यक्रम के रूप में परिकल्पित किया गया था जिसका उद्देश्य व्यवहार परिवर्तन और सामाजिक कार्रवाई था। नाको वर्ष 2002 से एचआईवी/एड्स पर छह विशेष एपिसोड प्रसारित करता रहा है।

कल्याणी के सकारात्मक पहलू

- आम लोगों में जागरूकता पैदा करने और स्वास्थ्य संबंधी सकारात्मक दृष्टिकोणों, रवैयों और व्यवहार को प्रेरित करने के लिए सार्वजनिक सेवा टीवी प्रसारण का प्रभावकारी उपयोग।
- ग्रामीण क्षेत्रों में डॉक्टरों के दौरों और कैमरा के सामने गांव के लोगों के साथ सीधे संपर्क के साथ 'रियलिटी शो फार्मेट' का उपयोग।
- असम में 'नो प्रॉब्लम', ओडिशा में 'शहरी दीदी' और छत्तीसगढ़ में 'सखी' जैसे लोकप्रिय नामों का उपयोग करते हुए अलग–अलग दूरदर्शन केंद्रों से जुड़ी स्थानीय हस्तियों के साथ 'क्षेत्र–आधारित फॉर्मेट' का उपयोग।
- एक 'समग्र पत्रिका फॉर्मेट' को आधार बनाते हुए इसने दर्शकों को जोड़े रखा और फोन, पत्रों, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं, साप्ताहिक प्रश्न प्रतियोगिताओं तथा मासिक नारा पुरस्कारों के माध्यम से उनकी भागीदारी को प्रोत्साहित किया।
- कार्यक्रम के अंतर्गत लोक गीतों, नुक्कड़ नाटक, वार्ताओं, एनिमेशन, समाचार, स्वास्थ्य संबंधी सुझावों और विचार–विमर्शों जैसे 16 फार्मेट शामिल थे।
- ऑन स्क्रीन/स्टूडियो के भीतर के कार्यक्रमों को कल्याणी क्लबों और अन्य आईपीसी कार्यक्रमों के साथ जोड़ा गया।

कल्याणी कार्यक्रम का आकलन

छह राज्यों – असम, बिहार, मध्य प्रदेश, ओडिशा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में कार्यक्रम की प्रभावकारिता और प्रभावोत्पादकता को समझने के लिए एक मूल्यांकन–अध्ययन किया गया। आंकलन के अंतर्गत 1,475 दर्शकों और 1,580 गैर–दर्शकों को शामिल करते हुए यह समझने का प्रयास किया गया कि वे एचआईवी/एड्स के संदेशों की याद्दाश्त, समझ और इन संदेशों का प्रभाव क्या रहा। अध्ययन के परिणामों से यह पता चला कि कल्याणी के दर्शकों का एचआईवी संबंधी ज्ञान और जागरूकता का स्तर दूसरों से अधिक है और पीएलएचआईवी के प्रति उनका दृष्टिकोण भी सकारात्मक था।

ज़्यादा कल्याणी दर्शकों ने गैर दर्शकों के मुकाबले एचआईवी/एड्स के बारे में सुना था (दर्शक 100 प्रतिशत; गैर दर्शक 93 प्रतिशत)। दर्शकों और गैर–दर्शकों दोनों के लिए एचआईवी संबंधी जानकारी का मुख्य स्रोत टेलिविजन था। जिन्होंने टेलिविजन के माध्यम से एचआईवी/एड्स पर जानकारी प्राप्त की, उनमें दर्शकों का अनुपात (97 प्रतिशत) गैर–दर्शकों (71 प्रतिशत) से उच्चतर था। इसका कारण दर्शकों और गैर–दर्शकों के बीच टीवी का स्वामित्व हो सकता है। आंकड़ों से यह भी पता चला कि एक चौथाई से अधिक (28 प्रतिशत) दर्शकों ने एचआईवी/एड्स संबंधी जानकारी कल्याणी क्लबों से प्राप्त की थी। गैर–दर्शकों तक कल्याणी क्लबों की पहुंच का संकेत भी मिलता है।

आज भी कल्याणी कार्यक्रम ग्रामीण दर्शकों के बीच लोकप्रिय कार्यक्रम है तथा यह स्वास्थ्य मुद्दों पर जानकारी का मुख्य स्रोत बना हुआ है।

■ सुश्री प्राची गर्ग
सलाहकार (आईईसी), नाको

आंध्र प्रदेश में आदिवासी उत्सव ने फैलाई एड्स जागरूकता

मेदारम जातरा उत्सव - जिसने वीडीओ विज्ञापनों, बीसीसी और सचल वाहनों का उपयोग किया - के माध्यम से उच्च जोखिम वाले समूहों तक पहुंच बनाई गई।

आंध्र प्रदेश में एचआईवी और एड्स की रोकथाम और नियंत्रण के प्रयासों को एक भव्य आदिवासी उत्सव से ताकत मिली। इस उत्सव ने असुरक्षित समूहों तक प्रभावकारी ढंग से पहुंचने में मदद की। आंध्र प्रदेश के वारंगल जिले के मेदारम में आयोजित "सम्माक्का–सरलम्मा जातरा या मेदारम जातरा" नाम इस उत्सव में "संपर्क कार्यकर्ता योजना" के अंतर्गत हजारों आदिवासी पुरुषों और महिलाओं ने आईईसी कार्यकलापों का लाभ उठाया।

इस उद्देश्य से एक सचल आईईसी वाहन आदिवासी जिलों से होकर गुजरा। वाहन पर होर्डिंग, बैनर और पोस्टर जैसी प्रचार सामग्री मौजूद थी। इसके अलावा एचआईवी संबंधी जागरूकता, रोकथाम और नियंत्रण पर वीडीओ विज्ञापनों वाली डीवीडीज ने लोगों में दिलचस्पी और उत्सुकता पैदा की।

इसके साथ–साथ अनेक अन्य कार्यक्रम भी प्रोन्नत आयोजित किये गये। रक्त बंधु अभियान ने रक्त सुरक्षा को प्रोन्नत करने में मदद की। दूरदर्शन के नेष्ठम नामक टॉक शो के अंतर्गत एचआईवी/एड्स से संबंधित अनेक मुद्दों को उठाया गया। इसे सप्ताह में तीन बार लोकप्रिय क्षेत्रीय चैनलों के माध्यम से प्रसारित किया गया।

■ श्री वेंकटेश्वर राव
उपनिदेशक (आईईसी), आंध्र प्रदेश एड्स नियंत्रण सोसाइटी

अण्डमान और निकोबार की प्राथमिकता है नशीले पदार्थों के उपयोग का मुद्दा

रेड रिबन क्लब ने छात्रों के लिए एक स्वैच्छिक, कैंपस-आधारित प्रोन्नतिकारी और रोकथामकारी हस्तक्षेप का कार्य किया।

अंडमान और निकोबार एड्स नियंत्रण सोसाइटी (एएनएसीएस) ने शैक्षिक संस्थाओं में स्वैच्छिक कैंपस–आधारित हस्तक्षेप कार्यक्रम के रूप में एक रेड रिबन क्लब (आरआरसी) की स्थापना की है। यह प्रोन्नतिकारी और रोकथामकारी कार्यक्रम युवाओं की ऊर्जा को सकारात्मक और समग्रतापूर्ण तरीके से निर्देशित करेगा।

सात रेड रिबन क्लबों का गठन किया गया और युवाओं के लिए अनेक अभिमुखीकरण और क्षमता–निर्माण कार्यशालाएं आयोजित की गईं। एचआईवी/एड्स, नशीली दवाओं के उपयोग और शराबखोरी के बारे में जानकारी का प्रचार–प्रसार करने के लिए हमजोली शिक्षकों (पीयर एडुकेटर्स) को नियुक्त किया गया। ये हमजोली शिक्षक समय पर सहायता प्राप्त करने के इच्छुक नशीले पदार्थों का सेवन करने वाले लोगों को संबंधित संस्थाओं से जोड़ने में मदद करेंगे।

> *इसके साथ ही एएनएसीएस ने 12 जनवरी, 2012 को "युवा रक्तदाता जीवन–रक्षक है!" विषय को लेकर अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन किया।*

अंडमान में आरआरसी सदस्यों के लिये मादक द्रव्यों के दुरूपयोग पर क्षमता निर्माण कार्यशाला

इसके साथ ही एएनएसीएस ने 12 जनवरी, 2012 को "युवा रक्तदाता जीवन–रक्षक है!" विषय को लेकर अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस का आयोजन किया। युवा लोगों को आगे बढ़कर नियमित रक्तदाता बनने हेतु प्रोत्साहित करने के लिए रैलियों, सेमिनारों, रक्तदान शिविरों, आदि का आयोजन किया गया। अकेले जनवरी के महीने में ही चार रक्तदान शिविर आयोजित किये गये और 85 रक्त इकाइयां एकत्रित की गईं।

■ डॉ. यास्मीन
उपनिदेशक (आईईसी),
अंडमान और निकोबार एड्स नियंत्रण सोसाइटी

कर्नाटक ने 46 एआरटी केंद्रों में प्रकोष्ठ स्थापित किये

12 घंटों वाली निःशुल्क कानूनी हैल्पलाइन एचआईवी-पॉजिटिव लोगों तक पहुंची - इस आशा के साथ कि उनके साथ भेदभाव में कमी आयेगी और एक समतापूर्ण समाज का निर्माण होगा।

एक–दिवसीय प्रशिक्षक–प्रशिक्षण कार्यशाला के दौरान सौ से भी अधिक वकीलों के लिए एचआईवी पर तथा एचआईवी से प्रभावित लोगों के जीवन से जुड़े नैतिक और कानूनी मुद्दों पर एक संक्षिप्त प्रस्तुतीकरण किया गया। इस प्रशिक्षण का एक उद्देश्य सरकार के एआरटी केंद्रों में कानूनी प्रकोष्ठों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं के बारे में सहभागियों को जानकारी प्रदान करना था। इस प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन कर्नाटक राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा कर्नाटक राज्य विधि सेवा प्राधिकरण के सहयोग से जनवरी 25, 2012 को बंगलौर में किया गया।

इस अवसर पर आम लोगों के लिए एक परस्पर संवादात्मक और जानकारीयुक्त वेबसाइट की शुरूआत भी की गई। इस वेबसाइट का उद्देश्य कानूनी सेवाएं पाने के इच्छुक लोगों, विशेषकर शिक्षितों की समझ को बढ़ाना था। कर्नाटक के स्वास्थ्य सचिव, श्री ई.वी. रमना रेड्डी ने बताया कि, "कानूनी केंद्र एचआईवी/एड्स से प्रभावित लोगों के विरुद्ध लांछनपूर्ण और भेदभावपूर्ण व्यवहार को समाप्त करने के केएएसपीएस के प्रयास का अंग है। इस उद्देश्य से एक निःशुल्क हैल्पलाइन (1800–425–8500) सोमवार से शनिवार तक प्रातः 8 बजे से रात्रि 8 बजे तक कार्यरत रहेगी। एसएलएसए के सदस्य, न्यायपूर्ति वी.वी अंगदी के अनुसार, "178 कानूनी प्रकोष्ठों द्वारा निःशुल्क कानूनी सेवा प्रदान की जा रही है। मास्टर प्रशिक्षक कर्मियों को एचआईवी संबंधी कानूनी और नैतिक मुद्दों पर प्रशिक्षण प्रदान करेंगे।

कर्नाटक बंगलौर में एक दिवसीय कानूनी प्रकोष्ठ पर प्रशिक्षक – प्रशिक्षण कार्यशाला।

■ श्री कुलंदई राज
संचार अधिकारी (टीएसयू), कर्नाटक एसएपीएस

अरुणाचल प्रदेश में संगीत ने किया युवाओं को एचआईवी-मुक्त रहने के लिए प्रेरित

युवाओं से जुड़ने और उन्हें एड्स की रोकथाम तथा नियंत्रण के बारे में शिक्षित करने के लिए लोकप्रिय हार्ड रॉक बैंड्स ने संगीत का उपयोग किया।

अरुणाचल प्रदेश में एचआईवी/एड्स जागरूकता, रोकथाम और नियंत्रण अभियान को जो चीज दूसरे अभियानों से अलग करती है वह है, युवाओं तक संदेश पहुंचाने के लिए मल्टीमीडिया अभियान का चतुराई से उपयोग।

अरुणाचल प्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी (एपीएसएसीएस) ने राज्य के 12 जिलों को परिधि में लेते हुए अपने मल्टीमीडिया अभियान (एसएमसी) के अंतर्गत अनेक रॉक कंसर्ट्स का आयोजन किया। इन 12 जिलों में चांगलांग जिला भी शामिल है जहां एचआईवी के सबसे अधिक मामले सामने आये हैं।

अभियान की शुरूआत एलियन गॉड्स और कार्नाल सिन्स जैसे स्थानीय हार्ड रॉक बैंडों के साथ की गई। इसका उद्देश्य एचआईवी की रोकथाम, उपचार, इससे संबंधित लांछन और भेदभाव से जुड़े संदेश युवा लोगों तक पहुंचाना था।

इस अभियान ने लोगों में दिलचस्पी और उत्साह पैदा किया। इससे प्रेरित होकर कई युवा आगे आये; उन्होंने सवाल उठाये, अपने संदेहों को दूर किया और कुल मिलाकर यौनिकता के बारे में स्वस्थ और सुरक्षित सोच विकसित की।

■ श्री तशोर पाली
उपनिदेशक (आईईसी), अरुणाचल प्रदेश एसएसीएस

रक्तदान करें - प्यार का संदेश फैलायें!

यहां वेलेंटाइन दिवस अलग ढंग से मनाया गया।

मिजोरम के आईजॉल जिले में अपने वेलेंटाइन के लिए रक्तदान करती हुई युवा महिला

पिछले तीन वर्षों से आईजॉल वेलेंटाइन दिवस को एक खास उद्देश्य के साथ मनाता रहा है। इसका आयोजन एक उत्साही युवती, जिकपुई ने किया जो कि स्थानीय चैनल एलपीएस में टीबी प्रेजेंटर तथा एयर मिजोरम में रेडियो जॉकी हैं। उनकी इस पहलकदमी को मिजोरम राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी और स्वैच्छिक रक्तदान एसोसिएशन से सहायता प्राप्त हुई। स्थानीय संचार माध्यमों ने भी शहर भर में संदेशों का प्रचार–प्रसार करते हुए इस अनूठी पहलकदमी को सहायता प्रदान की। रक्तदान शिविर में भारी संख्या में लोग उमड़ आये।

जिकपुई का मानना है कि वेलेंटाइन दिवस पर रक्तदान करना विश्व में प्यार फैलाने का एक सुन्दर तरीका है। रक्तदान के बदले में रक्तदाताओं को आयोजकों द्वारा गुलाब के फूल, केक और चॉकलेट दिये जाते हैं। इस अवसर पर 500 युवा लोगों ने भागीदारी की। स्कूली बच्चों ने डॉक्टरों और तकनीकी लोगों की मदद की। स्थानीय कलाकारों ने आयोजन स्थल पर अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये और हर किसी ने इसका आनंद उठाया। 298 पुरुषों और 112 महिलाओं से कुल 410 रक्त इकाइयां एकत्र की गईं। मिजोरम के दो अन्य जिलों में भी यह कार्यक्रम साथ–साथ आयोजित किया गया था।

■ श्री जुलिअनी हराशल
उपनिदेशक (आईईसी), मिजोरम राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी

ओडिशा में लोक नृत्यों के माध्यम से ग्रामीण जन समुदाय का शिक्षण

तीस नृत्य मंडलियों ने चार-दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया और 8 जिलों में जाकर एचआईवी/एड्स के संदेश फैलाये।

भुवनेश्वर, ओडिशा में कार्यशाला के दौरान लोक नृत्य प्रदर्शन

ओडिशा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी ने एचआईवी / एड्स के बारे में ग्रामीण समुदाय को संवेदित करने के लिए एक चार–दिवसीय लोक नृत्य कार्यशाला आयोजित की। इस कार्यशाला का आयोजन भुवनेश्वर में 14–18 फरवरी, 2012 को किया गया।

गीत और नाटक प्रभाग द्वारा प्रमाणीकृत 30 लोक नृत्य मंडलियों ने एचआईवी के संदेशों को शामिल करते हुए गोदानाचा, घुडुकी, दसकथिया, पाला और संबलपुरी जैसे लोक नृत्य प्रस्तुत किये और इनके माध्यम से ऐसी स्थितियों को प्रस्तुत किया जो एचआईवी से प्रभावित परिवारों में घटित हो सकती है। पहले चरण में राज्य के 8 जिलों में इस लोक नृत्य कार्यक्रम का कार्यान्वयन किया जा रहा है।

कार्यशाला का संचालन एनआरएचएम के मिशन निदेशक, नाको के कंसल्टेंट और उड़ीसा राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी के संयुक्त निदेशक ने किया।

■ डॉ. त्रिपति मिश्रा
संयुक्त निदेशक (आईईसी), ओडिशा एसएसीएस

वचनबद्धता का आश्वासन

राजस्थान के विधायक एड्स के विरूद्ध संघर्ष को मजबूती प्रदान करने के लिए एकजुट हुए।

एचआईवी/एड्स मात्र स्वास्थ्य का मुद्दा नहीं है और इससे समग्रतापूर्ण तरीके से निबटना अत्यंत महत्वपूर्ण है। विधायक समाज के नेता होते हैं और संपूर्ण समुदाय के हित में कार्य करने के लिए उनके पास जनादेश और जन विश्वास होता है। एचआईवी/एड्स के विरूद्ध संघर्ष में प्रगति हासिल करने के लिए उनके पास प्रभाव और संसाधन होते हैं। इसीलिए दूसरों को कार्य हेतु प्रेरित करने वाली मिसालें कायम करने का उन पर विशेष दायित्व होता है। राष्ट्रीय एड्स परिषद् को संबोधित करते हुए भारत के माननीय प्रधानमंत्री, डॉ. मनमोहन सिंह ने कहा, "भारत अपने राज्यों में बसता है। जब तक हर राज्य सरकार सक्रिय होकर एचआईवी/एड्स से संबंधित अपनी रणनीति का कार्यान्वयन नहीं करेगी, तब तक हम इस माहमारी पर रोक नहीं लगा सकते।"

संसदीय फोरम के माध्यम से किये गये राष्ट्रीय स्तर के प्रयासों से प्रेरणा प्राप्त करके राज्य की विधान सभा ने जून 2011 में "एचआईवी/एड्स पर विधायी सभा मंच" का गठन किया जिसका उद्देश्य, "इस महामारी को व्यापक प्रत्युतर देने के लिए राज्य के विभिन्न स्तरों पर नेतृत्व को मजबूत बनाना और विकसित करना था।

विधायी मंच की पहली बैठक का आयोजन मार्च 29, 2012 को विधान सभा के सभागार में किया गया। आरएसएसीएस ने राज्य में एचआईवी/एड्स पर एक विषयगत प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसका उद्घाटन राजस्थान विधान सभा के माननीय अध्यक्ष ने किया।

अपने स्वागत भाषण में श्री अलाउद्दीन आजाद ने कहा, "विधायी मंच इस रोग के बारे में जागरूकता पैदा करने की दिशा में एक पहलकारी कदम है। राजस्थान एचआईवी/एड्स से असुरक्षित है क्योंकि यहां से काफी संख्या में ट्रक गुजरते हैं और यहां से लोग भारी संख्या में प्रवास भी करते हैं और बाहर से प्रवासी भी यहां आते हैं। चिंता की बात यह है कि यह रोग युवाओं के बीच तेजी से फैल रहा है जिस पर मिलेजुले प्रभावों के माध्यम से रोक लगाने की जरूरत है।" श्री आजाद ने पड़ौसी राज्य गुजरात से वास्तविक जीवन की एक कहानी का जिक्र किया जिसमें एक पूरे के पूरे परिवार ने तक आत्महत्या कर ली जब यह पता चला कि परिवार के मुखिया को एचआईवी है।

राजस्थान नेटवर्क ऑफ पॉजिटिव पीपल (RNP+) की सदस्य सुश्री मोना बोलानी ने बताया कि किस तरह एचआईवी पॉजिटिव होने की वजह से उन्हें अपने परिवार के सदस्यों द्वारा तथा समाज और कार्यस्थल में लांछन और भेदभाव का शिकार बनाया गया। जब से वे आरएनपी+ में शामिल हुई तब से एचआईवी पॉजिटिव होने के बावजूद उनमें जीने का उत्साह बढ़ा है। उन्होंने एचआईवी/एड्स के साथ जीने वाले लोगों के लाभ हेतु कल्याणकारी योजनाएं आरंभ करने के लिए राजस्थान सरकार का धन्यवाद किया और सभी सदस्यों से आग्रह किया कि राज्य में पीएलएचआईवी के प्रति लांछन और भेदभाव को समाप्त करने के लिए आगे बढ़कर कार्य करें।

विपक्ष के उपनेता, श्री घनश्याम तिवारी ने कहा कि विधायक होने के चलते हमारे दो प्रमुख कर्तव्य हैं – एक है सामाजिक लामबंदी और दूसरा है जन जागरूकता। हर विधायक का यह नैतिक दायित्व है कि

संगोष्ठी के उद्घाटन के अवसर पर दीप प्रज्जवलित करते हुए राजस्थान विधान सभा के माननीय अध्यक्ष श्री दीपेन्द्र सिंह शेखावत के साथ राजस्थान के माननीय स्वास्थ्य मंत्री श्री ए.ए. खान

वह अपने चुनाव क्षेत्र में एचआईवी/एड्स के बारे में लोगों को शिक्षित करे और साथ ही इस रोग से लड़ने के लिए हर किसी की मदद प्राप्त करें।

राजस्थान विधान सभा के माननीय अध्यक्ष, श्री दीपेन्द्र सिंह शेखावत ने कहा कि, "एचआईवी का फैलाव तेजी से हो रहा है और अब समय आ गया है कि, "हम कार्रवाई करें। एचआईवी किसी को भी हो सकता है, पर कई लोगों को यह संक्रमण दूसरों की गलती की वजह से होता है। अतः सभी लोगों तक, जमीनी स्तर पर जागरूकता और सावधानी के संदेश पहुंचाने की जरूरत है।"

माननीय स्वास्थ्य मंत्री, श्री ए.ए. खान ने बताया, कि राज्य में पीएलएचआईवी के लाभ के लिए बनाई गई योजनाओं की प्रतियां सभी विधायकों के बीच परिपत्रित की जायेगी। पीएलएचआईवीज के लिए अनेक कल्याणकारी योजनाओं के कार्यान्वयन में राजस्थान एक अग्रणी राज्य रहा है और इन योजनाओं के लाभ जन प्रतिनिधियों के माध्यम से सभी जरूरतमंद लोगों तक पहुंचने चाहिए। सभी पीएलएचआईवीज को शालीन और सम्मानपूर्ण जीवन जीने का अधिकार है और हम सभी को इसमें उनकी मदद करनी चाहिए। जन नेताओं के रूप में हमें मिसाल कायम करनी चाहिए। दलीय और वैचारिक मतभेदों को आरपार काटते हुए सभी विधायकों को एचआईवी/एड्स के विरूद्ध संघर्ष में एकजुट होना चाहिए।

स्वास्थ्य मंत्री के अभिभाषण के बाद मणिपुर के एक विधायक डॉ. बिनोय सिंह ने मणिपुर में एचआईवी/एड्स पर विधायी मंच के सर्वोत्तम कार्यों की जानकारी दी। हर विधायक ने अपनी स्थानीय निधि से एक लाख रूपए का योगदान किया और सरकार से कहा कि वह भी इसमें एक लाख रूपए का योगदान करे तथा इस निधि का उपयोग एचआईवी पॉजिटिव रोगियों की यात्रा पर व्यय करने हेतु किया जाये। इसके अलावा, एलएफए के प्रयासों के चलते राज्य ने तीव्र एचआईवी जांच परिणाम हासिल करने के लिए एक पीसीआर जांच मशीन प्राप्त की है। डॉ. सिंह ने कहा कि इस प्रकार के कार्य में सहायता हेतु यूएनएड्स जैसी संस्थाएं मौजूद हैं। उन्होंने राजस्थान के सभी विधायकों से आग्रह किया है एचआईवी की रोकथाम के उदान्त ध्येय के लिए लिए वे एकजुट रहें।

■ डॉ. प्रदीप चौधरी
संयुक्त निदेशक (आईईसी), राजस्थान एड्स नियंत्रण सोसायटी

नाको की वार्षिक रिपोर्ट 2011-12 का विमोचन

नाको ने अपनी वर्ष 2011-12 की वार्षिक रिपोर्ट जारी की है।

एचआईवी संबंधी निगरानी से पता चलता है कि वयस्कों के बीच एचआईवी–व्याप्ति में कमी आई है। महामारी के प्रक्षेपणों (प्रोजेक्शंस) से यह प्रकट होता है कि अनुमानित वार्षिक एचआईवी के मामलों में (यानी नये संक्रमणों में) पिछले दशक में 56 प्रतिशत की गिरावट आई है (2000–2009)। एआरटी के अधिक व्यापक रूप से सुलभ होने से एड्स–संबंधी कारणों से होने वाली मृत्युओं की संख्या कम हुई है। यह राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम (एनएसीपी) के अंतर्गत विभिन्न हस्तक्षेपों और विस्तारित रोकथाम रणनीतियों के प्रभाव का सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रमाण है।

जहां राष्ट्रीय स्तर पर और राज्यों में भी एचआईवी के रुझानों में गिरावट देखी गई है, वहीं कुछ निम्न व्याप्ति वाले और एचआईवी से असुरक्षित राज्यों में एचआईवी की महामारी के रुझानों में उभार देखने में आ रहा है जिसकी वजह से इन राज्यों में ठोस रोकथामकारी प्रयास करना आवश्यक हो गया है। राष्ट्रीय स्तर पर और अधिकतर राज्यों में महिला यौन कर्मियों के बीच एचआईवी–व्याप्ति में गिरावट के रुझान नजर आ रहे हैं। किंतु अनेक राज्यों में 'पुरुषों के साथ यौन संपर्क करने वाले पुरुष', 'नशीली दवा की सुई लगाने वाले लोग' और 'अकेले पुरुष प्रवासी' जैसी सेतु आबादी महत्वपूर्ण जोखिमपूर्ण समूहों के रूप में उभर कर आ रही है।

मुख्य उपलब्धियां

1,785 लक्ष्यबद्ध हस्तक्षेप परियोजनाओं के माध्यम से 81 प्रतिशत महिला यौनकर्मियों, 80 प्रतिशत नशे की सुई लगाने वालों, 64 प्रतिशत समलैंगिक पुरुषों, 40 प्रतिशत प्रवासियों और 57 प्रतिशत ट्रक चालकों को रोकथामकारी सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। सरकारी स्वास्थ्य सुविधाओं के माध्यम से आईडीयूज को बुप्रेनोरफाइन अनुरक्षण उपचार प्रदान करने के लिए लगभग 62 ओएसटी केंद्रों की स्थापना की गई है।

नाको ने रेड रिबन एक्सप्रेस परियोजना का तीसरा चरण देश भर में राष्ट्रीय लोक संचार अभियान आरंभ किया है। पूर्वोत्तर के राज्यों ने सफलतापूर्वक लगातार तीसरे वर्ष रेड रिबन सुपरस्टार कार्यक्रम का कार्यान्वयन किया है।

अलग से स्थापित 4,486 आईसीटी केंद्रों के पीएचसीज से जुड़े 4,071 आईसीटी केंद्रों और सार्वजनिक निजी साझेदारी के अंतर्गत स्थापित 902 आईसीटी केंद्रों के माध्यम से आईसीटी सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। वर्ष 2011–12 के दौरान, 161.39 लाख सेवाग्राहियों को जिनमें 70.8 गर्भवती महिलाएं भी शामिल थीं, जनवरी 2012 तक परामर्श और जांच सेवाएं प्रदान की जा चुकी थीं। जो 13,213 गर्भवती महिलाएं जांच के बाद एचआईवी पॉजिटिव पाई गईं, उनमें से 11,074 को उनके शिशुओं के साथ नेविरापाइन रोग–निरोधक प्रदान किया गया ताकि मां से बच्चे के एचआईवी संचरित न हो।

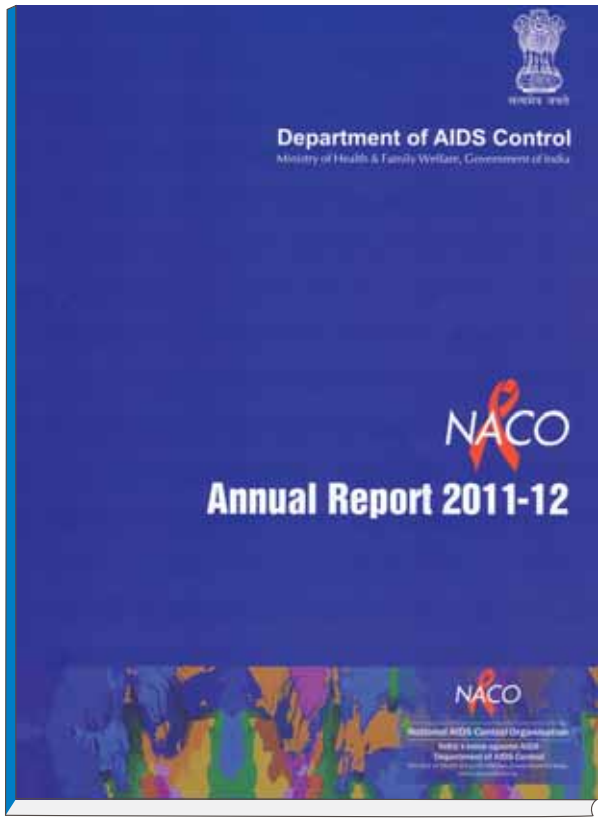

इसके अलावा 171 रक्त घटक पृथक्करण इकाइयों और 28 मॉडल रक्त बैंकों सहित 1,149 नाको–समर्थित रक्त बैंकों के तानेबाने के माध्यम से सुरक्षित रक्त की सुलभता सुनिश्चित की गई है। वर्ष 2011–12 के दौरान, जनवरी 2012 तक 72.7 लाख रक्त इकाइयां एकत्र की जा चुकी थीं और इनमें 83.1 रक्त इकाइयां स्वैच्छिक रक्तदान द्वारा प्राप्त की गई थीं।

28,225 बच्चों सहित लगभग 4.86 लाख पीएलएचआईवी 342 एआरटी केंद्रों और 685 संपर्क एआरटी केंद्रों के माध्यम से निःशुल्क एआरटी उपचार प्राप्त कर रहे हैं। 4,209 पीएलएचआईवी दूसरी पंक्ति का एआरटी उपचार प्राप्त कर रहे हैं।

देश के 26 राज्यों में 1,088 आईसीटी केंद्रों और 217 एआरटी केंद्रों के माध्यम से आरंभिक शिशु निदान कार्यक्रम आरंभ किया गया है। वर्ष 2011–12 के दौरान 18 माह से कम आयु के एचआईवी के संपर्क में आये 6,927 बच्चों और शिशुओं की जांच की गई।

परिणाम फ्रेमवर्क दस्तावेज 2010–11 में विभिन्न कार्यकलापों के कार्य–प्रदर्शन के लिए एड्स नियंत्रण विभाग को मंत्रिमंडल सचिवालय के कार्यप्रदर्शन प्रबंधन प्रभाग द्वारा उत्कृष्ट श्रेणी के साथ 91.27 प्रतिशत अंक प्रदान किये गये।

■ सुश्री प्राची गर्ग
सलाहकार (आईईसी), नाको

प्रमुख संपादकः सुश्री आराधना जौहरी, अतिरिक्त सचिव
संपादकः श्री के. श्यामा प्रसाद, संयुक्त निदेशक
संपादक दलः डॉ. संध्या काबरा, सहायक महानिदेशक, डॉ. एस. वेंकटेश, उप महानिदेशक (शोध एवं विकास तथा निगरानी एवं मूल्यांकन), डॉ. नीरज ढींगरा, उप महानिदेशक (टीआई), डॉ. एस.डी. खापरडे, उप महानिदेशक (एसटीआई), डॉ. एम. शौकत, सहायक महानिदेशक (बीएस) और सुश्री प्राची गर्ग, सलाहकार (आईईसी)

नाको समाचार राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (नाको), स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार की पत्रिका है।
नवीं मंजिल, चंद्रलोक बिल्डिंग, 36 जनपथ, नई दिल्ली – 110 001. टेलिः 011–23325343; फैक्सः 011–23731746, www.nacoonline.org

संकलन, रूपांकन और मुद्रण – न्यू कॉन्सेप्ट इंफोरमेशन सिस्टम्स प्रा. लि., नई दिल्ली
यूएनडीपी की सहायता से मुद्रित